तर्ज-- सौ साल पहले

झूठ बदले खोया सांचा,सुख री सुहागनी
पूछ अपनी आतम सों,कैसी ये जागनी

1--मैं खुदी खड़ी आड़े, धनी सो मिलन न होने दे
ये समां न फिर मिलसी, इसे न व्यर्थ मे खोने दे
अपने तो प्रीतम,श्री श्यामा श्याम री

2--इस झूठ का संग करके, अपना वतन दिया है विसार
प्रीतम के चरण कमल, सखी री आतम के आधार
अपना ठिकाना,श्री निजधाम री

3--पिऊ प्यारे ने दीन्हा, हमे ये इलम जगाने को
उठ नींद निगोड़ी से, आये कंत बुलाने को
चलना है उनके संग,अक्षर पार री
अपने धनी की तू,अंगना नार री

Nijanand App